

**न्यायालय राजस्व अपील प्राधिकारी, सवाई माधोपुर**

अपील संख्या - 98/24

GCMS NO 2024/178

1. हीरालाल पुत्र केसरा

2. गोकुल पुत्र झारेडा

3. नन्दकिशोर पुत्र पून्या

प्यार सिंह पुत्र कमोद

हरि सिंह पुत्र कमोद जातियान खारवाड निवासी सुमेल तहसील बामनवास जिला सवाई माधोपुर



अपीलांट

बनाम

1. लैण्ड होल्डर तहसीलदार बामनवास

2. रामजीलाल पुत्र कल्याण जाति गुर्जर निवासी गंगापुर सिटी जिला सवाई माधोपुर  
रैस्पों

(अपील विरुद्ध मु०न० 37/08 निर्णय व डिक्री दिनांक 26.8.10 न्यायालय उपजिला कलक्टर, बामनवास )  
अभिभाषक अपीला० श्री श्याम मोहन शर्मा  
अभिभाषक रैस्पों श्री कमलेश गुर्जर

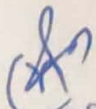
दिनांक 26.05.2025

**निर्णय**

प्रस्तुत अपील अपीला० की ओर से अंतर्गत धारा 223 विरुद्ध निर्णय व डिक्री दिनांक 26.8.10 न्यायालय उपजिला कलक्टर, बामनवास पेश की है ।

अपील के तथ्य संक्षेप में इस प्रकार से हैं कि अधिनस्थ न्यायालय में वादी/अपीलांट द्वारा एक वाद पत्र इन्द्राज दुरुस्ती एवं घोषणा खातेदारी इस आशय का पेश किया कि साबिक खसरा न० 319/466 रकबा 5 बीघा वाके ग्राम सुमेल रामजीलाल पुत्र कल्याण गुर्जर की खातेदारी एवं कब्जे काशत की भूमि रही थी। वादी न० 1 ता 3 व वादी न० 4 व 5 के भाई रामसहाय ने उक्त आराजीयात जरिये रजिस्ट्री क्रय की थी। इसके बाद उक्त आराजी का नामा० संख्या 326 वादी न० 1 ता 3 व 4 व 5 के भाई रामसहाय के नाम खुल गया। हरसहाय पुत्र कमोद कंवार की फौत हो गया, उसके खास भाई प्यार सिंह व हरि सिंह है। जो उसके हिस्से पर काबिज है। इसलिए पक्षकार बनाया गया है। बामनवास में सेटलमेंट हुआ। सेटलमेंट के अधिकारियों से भूल से उक्त साबिक ख०न० 319/466 रकबा 5 बीघा का हाल न० 1130 रकबा 1.82 है० कायम कर दिया जो साबिक रकबे से 38 ऐयर ज्यादा है। इस हाल खसरा न० 1130 को वापस खातेदारी विक्रेता के नाम कर दी व वादीगण का नाम हटा दिया। इस कारण दावा इन्द्राज दुरुस्ती पेश करना आवश्यक हुआ। अतः साबिक ख०न० 319/466 रकबा 5 बीघा वाके ग्राम समुल का सेटलमेंट अधिकारियों द्वारा भूल से ख०न० 1130 रकबा 1.82 है० कायम कर दिये उसे दुरुस्त कराते हुए वादीगण को साबिक रकबे व खातेदारी व कब्जे के आधार पर 5 बीघा का वादीगण को खातेदार घोषित किया जावे इसी प्रकार राजस्व रिकार्ड में दुरुस्ती की जावे। इस प्रकार की इस्तदुआ अधिनस्थ न्यायालय से वादीगण/अपीलांट द्वारा चाही जाने पर अधिनस्थ न्यायालय द्वारा वादीगण/अपीलांट वाद

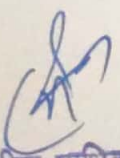


  
राजस्व अपील प्राधिकारी  
सवाई माधोपुर

पत्र आंशिक रूप से डिक्री किये जाने से व्यथित होकर अपीलान्त/वादीगण द्वारा यह अपील इस न्यायालय में पेश की गई है।

अपील पेश होने पर दर्ज रजिस्टर की जाकर अधिनस्थ न्यायालय का रिकार्ड तलब किया गया। रेस्पों को नोटिस जारी कर तलब किया गया। बहस उभयपक्ष अधिवक्तागणों की अपील पर सुनी गई।

अपीलान्त के अधिवक्ता ने अपील में अंकित तथ्यों को दोहराते हुए कथन किया कि अधिनस्थ न्यायालय द्वारा वादीगण का वाद पत्र आंशिक रूप से स्वीकार करने में अहम भूल की है। अधिनस्थ न्यायालय ने वादीगण द्वारा प्रस्तुत दस्तावेजों से विवादग्रस्त आराजी साबिक खसरा न० 319/466 रकबा 5 बीघा रेस्पों संख्या 2 से जरिये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र दिनांक 24.1.86 को अपीलान्त/वादीगण के पूर्वज रामसहाय द्वारा खरीद करना साबित माना है तथा उक्त खसरा न० अपीलान्त वादीगण का खरीद से आज तक कब्जा काशत साबित माना है। अधिनस्थ न्यायालय ने यह भी स्वीकार किया है कि विक्रेता के नाम उक्त आराजी ख० न० 319/466 रकबा 5 बीघा नामा० संख्या 303 गैर खातेदारी से खातेदारी में दर्ज किया जा चुका था उसके बाद उक्त आराजी जरिये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र वादीगण के पूर्वज रामसहाय द्वारा खरीद की गई उसके बाद उक्त आराजी जरिये नामा० संख्या 326 वादीगण के पूर्वज क्रेता रामसहाय के नाम राजस्व रिकार्ड में दर्ज हो चुकी थी। इस प्रकार सभी तथ्यों को स्वीकार करते हुए अपीलान्त वादीगण का वाद डिक्री किया जाना न्यायोचित माना है फिर भी अपीलान्त का दावा निर्णय व डिक्री करते समय अपीलान्त वादीगण का वाद आंशिक रूप से डिक्री कर खसरा न० 319/466 का नवीन ख० न० 1150 रकबा 1.82 है० के स्थान पर 0.57 है० सुमेल का अपीलान्त वादीगण संख्या 1 व 3 को 3/4 हिस्सा अपीलान्त वादीगण संख्या 4 व 5 को 1/4 हिस्से का खातेदार काशतकार घोषित किया है जबकि अपीलान्त वादीगण उक्त आराजी के 1.25 है० वाके सुमेल के खातेदार काशतकार है। लेकिन अधिनस्थ न्यायालय ने 1.25 है० भूमि का अपीलान्त वादीगण को खातेदार काशतकार घोषित नहीं करने में अहम भूल की है। अधिनस्थ न्यायालय ने अपना निर्णय करते समय इस बाबत भी ध्यान नहीं दिया कि अपीलान्त वादीगण ने रेस्पों संख्या 2 से 5 बीघा अर्थात् 1.25 है० भूमि जरिये रजिस्टर्ड विक्रय पत्र खरीद की है। जबकि 0.57 है० भूमि मात्र 2 बीघा 15 विस्वा भूमि होती है इस प्रकार निर्णय व डिक्री अधिनस्थ न्यायालय निरस्त किया जाना न्यायहित में आवश्यक है। अपीलान्तगण अनपढ अशिक्षित गरीब काशतकार पेशा व्यक्ति है जिनको वकील ने दावा जीतना बता दिया कहा कि डिक्री की पालना हेतु तहसीलदार रेस्पों संख्या 1 को इजराय करवाने हेतु कार्यवाही कर दी है तथा उक्त विवादग्रस्त आराजी की 5 बीघा भूमि अर्थात् 1.25 है० भूमि अपीलान्त/वादीगण का नाम राजस्व रिकार्ड में दर्ज हो जावेगी अपीलान्त इसी विश्वास में रह गये। अभी हाल अपीलान्त वादीगण अपनी खातेदारी की आराजी पर ऋण लेने हेतु के०सी०सी० बनाने हेतु हल्का पटवारी के पास दिनांक 30.6.12 को नकल लेने गये तो ज्ञात हुआ कि अपीलान्त वादीगण के उक्त खाते में 1.25 है० भूमि वाके ग्राम सुमेल के स्थान पर अपीलान्त वादीगण की खातेदारी में मात्र 0.57 है० भूमि ही दर्ज है जिस पर अपीलान्त वादीगण अपने वकील से जाकर उक्त बात बताई। तो उन्होंने रिकार्ड देखकर बताया कि अपीलान्त वादीगणों का दावा तो डिक्री हुआ है लेकिन उसमें पता नहीं 0.57 है० भूमि का ही निर्णय क्यों किया गया है। जिस पर अपीलान्त/वादीगण ने नकल प्राप्त की जाकर बिना किसी देरी के अपील

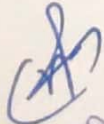
  
राजस्व अपील प्राधिकारी  
सवाई माधोपुर

पेश की गई है। अतः अपील की अपील स्वीकार फरमाई जाकर अधिनस्थ न्यायालय का निर्णय व डिक्री अपास्त किया जाकर अपील/वादीगण के पूर्वजो द्वारा रजिस्टर्ड की गई आराजी ख0न0 319/466 रकबा 5 बीघा हाल खसरा न0 1.82 है0 मे से 1.25 है0 का प्रार्थी को खातेदार कारतकार घोषित कर डिक्री पारित की जावे।

रेस्पो0के अधिवक्ता ने बहस के दौरान कथन किया भू प्रबंध विभाग द्वारा साबिक रिकार्ड एवं मौके की स्थिति अनुसार ही रिकार्ड तैयार किया गया है। भू प्रबंध विभाग द्वारा भूमि खसरा न0 319/466 रकबा का नवीन खसरा न0 1130 रकबा 1.82 है0 यदि गलत कायम किया है तो वादीगण/अपीलांट को भू प्रबंध के दौरान आपत्ति करनी चाहिए थी। भू प्रबंध को समाप्त हुए 20 वर्ष हो चुके हैं। जबकि अपील/वादीगण द्वारा इसके संबंध में कोई कार्यवाही नहीं की गई है। इस प्रकार अधिनस्थ न्यायालय द्वारा मौके एवं कब्जे के आधार पर विधि के अनुरूप ही निर्णय व डिक्री पारित की गई है। अतः अपील की अपील खारिज फरमाई जावे।

उभयपक्ष अधिवक्तागणों की बहस पर मनन किया। अधिनस्थ न्यायालय की पत्रावली का अवलोकन किया गया। जिससे यह तथ्य सामने आये कि आराजी साबिक खसरा न0 319/466 रकबा 5 बीघा को अपील/वादीगण के बुजुर्गों को रेस्पो0/प्रतिवादी रामजीलाल पुत्र कल्याण गुर्जर द्वारा दिनांक 24.1.86 को विक्रय की गई है। जिसकी पुष्टि पत्रावली में उपलब्ध विक्रय पत्र से होती है। उक्त विक्रय पत्र की पालना में नामा0 संख्या 326 प्रदर्श 4 के अनुसार प्रतिवादी रामजीलाल के स्थान पर क्रेताओं के नाम दर्ज हुआ है। जिसे अधिनस्थ न्यायालय द्वारा भी माना गया है। सेटलमेंट विभाग द्वारा दौरान सेटलमेंट भूमि साबिक खसरा न0 319/466 रकबा 5 बीघा के नवीन खसरा न0 1130 रकबा 1.82 है0 दर्ज किया है जो कि साबिक के मुकाबले 38 ऐयर ज्यादा है। जिसे दुरुस्त कराने की प्रार्थना वादीगण/अपीलांट द्वारा अधिनस्थ न्यायालय से की गई थी। अधिनस्थ न्यायालय द्वारा वादीगण/अपीलांट का वाद पत्र आंशिक स्वीकार किया जाकर भूमि हाल खसरा न0 1130 रकबा 0.57 है0 का खातेदार वादीगण को घोषित किया गया है शेष रकबा 0.68 है0 के बाबत किसी प्रकार का उल्लेख अधिनस्थ न्यायालय द्वारा अपने निर्णय में नहीं की गई है। प्रतिवादी रामजीलाल द्वारा रजिस्टर्ड विक्रय पत्र 1.25 है0 भूमि का किया गया है। इस प्रकार अधिनस्थ न्यायालय द्वारा पारित निर्णय व डिक्री में विधिक त्रुटि होने से निरस्त किया जाना उचित प्रतीत होता है एवं प्रकरण अधिनस्थ न्यायालय को पुनः सम्पूर्ण राजस्व रिकार्ड की जाँच की जाकर उभयपक्ष को साक्ष्य सुनवाई का समुचित अवसर प्रदान कर निर्णय पारित करने हेतु रिमाण्ड किया जाना उचित है।


अतः अपील अपील/अपीलांट रिमाण्ड योग्य होने से रिमाण्ड की जाती है। अधिनस्थ न्यायालय उप जिला कलेक्टर बामनवास के प्रकरण संख्या 37/08 में पारित निर्णय व डिक्री दिनांक 26.8.2010 को अपास्त किया जाता है तथा प्रकरण अधिनस्थ न्यायालय को इस निर्देश के साथ प्रतिप्रेषित किया जाता है कि प्रकरण में विवादित आराजीयात के सम्पूर्ण राजस्व रिकार्ड की जाँच कर उभयपक्ष को साक्ष्य सुनवाई का समुचित अवसर प्रदान करते हुए पुनः विधि सम्मत निर्णय पारित करे। उभयपक्ष

  
राजस्व अपील प्राधिकारी  
सवाई माधोपुर

को पाबन्द किया जाता है कि वे अधिनस्थ न्यायालय मे दिनांक 7.7.2025 को उपस्थित होना सुनिश्चित करे।

निर्णय आज दिनांक 26.05.2025 को लिखाया जाकर सरे इजलास सुनाया गया



  
(लक्ष्मी कांत बालोत्र)  
राजशही अपील प्राधिकारी  
सवाई मोंघापुर